उदररोगांत पंचकर्म विधी -

क्रम	व्याधिनाम व अवस्था	पूर्वकर्म			
		स्नेहन	स्वेदन	वमन	विरेचन
१.	वातोदर [बाल्यावस्था]	चित्राकादि घृत.	तापस्वेद नाडी.	-	एरंड स्नेह त्रिवृत-द्राक्षा आरग्वध.
२.	वातोदर [कृश]	"	"	-	-
३.	पित्तोदर जाठराग्न्यादिदिप्ति प्राप्तबल.	—	--	--	आरग्वधादि कटुकाक्वाथ त्रिवृत्दुग्ध, साधित घृत एरंडसिध्द दूध आरग्वधासिध्द दूध
४.	पित्तोदर [सकफ]	--	—	--	तिल्वकघृत हरीतकी, स्नुही भावित, त्रिफला नाराचरस.
५.	पित्तोदर[सवात]	--	--	--	त्रिवृत्घृत
६.	कफोदर	चित्राकादि घृत	तापस्वेद नाडीस्वेद.	--	तिल्वकघृत हरीतकी, स्नुही भावित, त्रिफला नाराचरस.
७.	सन्निपातोदर	--	--	--	गुंजाग्नीरस अश्वकंचुकीरस
८.	प्लीहोदर	पंचतिक्त घृत.	तापस्वेद नाडीस्वेद.	—	त्रिवृत, घृत तिल्वकघृत आरग्वधादुग्ध गोमूत्रादुग्ध.
९.	यकृतोदर	--	--	--	इंद्रवारुणादिक्वाथ
१०.	बध्दगुदोदर	--	"	—	—
११.	छिद्रोदर	--	—	--	—
१२.	जलोदर	--	—	--	इच्छाभेदीरस स्नुहीक्षीर, नारायणचूर्ण, जलोदरारीरस, अश्वकंचुकीरस ई.

संक्षिप्त पथ्यदर्शिका

पंचकर्म			
नस्य	निरूह बस्ति	अनुवासन	रक्तमोक्षण
--	दाशमूलिक	-	-
-	-	तिलतैल	-
--	--	--	--
--	--	--	--
--	--	--	--
--	--	--	--

आवश्यकतानुसार सर्व कर्म करावे.

--	दाशमूलिक	तिलतैल	सिराव्यधा[वामकूर्परामध्ये]
--	"	"	सिराव्यधा[दक्षिण कूर्परामध्ये]
--	लवणयुक्त[दाशमूलिक]	"	--
--	वत्सकादिगण	"	--
--	क्षारयुक्त	--	--

सुधानिधी